B.A. Part I
Hindi Hons
Paper - I
(मध्यकालीन हिन्दी काव्य)
कबीर दास

(1)

1/11/21

डॉ० उपेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस० एस० कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न:- कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालें।

उत्तर - कबीर का स्थान हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में है। कबीर का काव्य हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। कबीर पर हिन्दी आलोचकों की नज़र है। उनके पद हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के कंठहार हैं। इनके सम्बन्ध में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो यहाँ तक कहा है कि - "हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ। महिमा में यह व्यक्तित्व केवल एक ही प्रतिद्वन्दी जानता है मात्र तुलसीदास।" एक ओर घर में कपड़ा बनाकर परिवार निर्वाह करना और दूसरी ओर समाज की तमाम रूढ़ियों, अंधविश्वासों और कुरीतियों पर कटाक्ष - ये कबीर के व्यक्तित्व के दो ऐसे पहलू हैं जिनके बीच उनका साहित्य सहज रूप से फैला है।

महात्मा कबीर आकाश के अंधकार से नक्षत्र तत्कालीन समाज में एक प्रकाश पुंज की भाँति उदित हुए। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न था। वे एक साथ धार्मिक, योगी, समाज सुधारक, भक्त एवं कवि सभी कुछ थे।

कबीर समाज सुधारक थे। कबीर ने अपने समय के सारे समाज को खुली आँखों से देखा था। उन्होंने तत्कालीन समाज में फैली तमाम कुरीतियों और अंधविश्वासों का घोर विरोध किया। कबीर जिस युग में हुए वह जटिल जाति बंधनों, वर्ग विभाजनों तथा धार्मिक विरोधों का युग था। समाज में अछूतों एवं निम्न वर्ग के लोगों को कोई स्थान नहीं दिया जाता था। कबीर स्वयं भी ऐसे वर्ग से सम्बंधित थे। अतः उन्हें भोगी जाने वाली इन यातनाओं का अच्छा अनुभव था। व्याप्त इन यातनाओं का ऊँच-नीच और जाति-पाँति उनके अपने पंथ में भी

कहा है:-